Dr.Sunita Kumari,
Guest Asst Prof
Dept of H Sc
RKS College, Saharsa
BA Part-III (H)

Dt.26/02/2022

प्रौढ़ शिक्षा का महत्व
(Importance of Adult Education).

किसी भी व्यक्ति या किसी भी राष्ट्र को निरक्षरता का बहुत भारी मूल्य चुकाना पड़ता है।

निरक्षरता व्यक्ति की प्रगति और देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक गम्भीर बाधा है। शिक्षा केवल स्कूली पढ़ाई के साथ समाप्त नहीं हो जाती है, बल्कि शैक्षिक प्रक्रिया कार्य स्थिति में और जीवन की विभिन्न परिस्थितियों (In life situations) में चलती रहती है।

प्रौढ़ शिक्षा के महत्व और आवश्यकता पर स्वामी विवेकानन्द ने इस प्रकार कहा, "जब तक लाखों लोग भूखे हैं तथा अज्ञानी हैं, मैं हर उस व्यक्ति को जो उनके खर्चे पर पढ़ा है, किन्तु उनकी ओर ध्यान नहीं देता, गद्दार मानता हूँ। हमारा सबसे बड़ा पाप यह है कि हम जनता की शिक्षा की उपेक्षा करते हैं और यही हमारी अवनति का कारण है। जब तक भारत की जनता अच्छी प्रकार शिक्षित नहीं हो जाती, अच्छी प्रकार पेट नहीं भरती और जब तक उसकी अच्छी प्रकार देखभाल नहीं होती तब तक राजनैतिक प्रयत्न व्यर्थ हैं।"

अनपढ़ता और अज्ञानता मानसिक दासता है और इससे छुटकारा मिले बिना हमारी स्वतंत्रता अधूरी है। डॉ० वी० के० आर० वी० राव ने सन् 1964 में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा की सिल्वर जुबली के अवसर पर कहा था कि अशिक्षा मानसिक दासता है और यदि हमें मानसिक दासता से छुटकारा मिल जाए तो हमारी आर्थिक दासता भी समाप्त हो जाएगी और तब हम वास्तव में स्वतंत्र बन सकेंगे — जिसकी आशा से हमने स्वतंत्रता संग्राम किया और अन्त में 1947 में सफलता प्राप्त की।

प्रौढ़ शिक्षा में साक्षरता को प्रथम चरण समझना चाहिए। इस विचारधारा पर बार-बार बल दिया गया है। इसे विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में स्वीकार किया गया। अफ्रीकी राज्यों का सम्मेलन 1961 में, जो अदीस अबाबा में हुआ, वहाँ शिक्षा विकास

के लिए इसे अपनाया गया और कहा गया कि प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य लिखने-पढ़ने और संख्या की जानकारी से अधिक होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति जिन्होंने थोड़ी-सी स्कूली शिक्षा प्राप्त की है, उन्हें जीवन से संबंधित शिक्षा देनी चाहिए।

प्रौढ़ शिक्षा की समस्यायें
(Problems in Adult Education)

प्रौढ़ शिक्षा के मार्ग में आने वाली प्रमुख समस्यायें अथवा बाधायें निम्नलिखित है —

1. निरक्षरता (Illiteracy) :— जनगणना, 2011 के अनुसार भारत की जनसंख्या का केवल 74.04 प्रतिशत ही साक्षर है जिसमें स्त्रियों की साक्षरता का प्रतिशत और भी कम है। स्पष्ट है कि निरक्षर जनसंख्या का प्रतिशत काफी अधिक है, जिसे साक्षर बनाना एक कठिन कार्य है।

(2.) अध्यापकों का अभाव (Lack of Teachers) :— प्रौढ़ का मानसिक स्तर बालक व किशोर के मानसिक स्तर से भिन्न होता है। अतः प्रशिक्षित अध्यापकों का होना आवश्यक है। इस क्षेत्र में अनुभवहीन अध्यापक प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकते। प्रौढ़ों को शिक्षा प्रदान करने के लिए अध्यापकों का अभाव भी एक जटिल समस्या है।

(3) पाठ्यक्रम की समस्या (Problem related to Curriculum) प्रौढ़ शिक्षा के पाठ्यक्रम के संबंध में शिक्षाशास्त्री एकमत नहीं है। बालकों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को प्रौढ़ों के लिए प्रयोग में नहीं ला सकते। इस प्रकार अपूर्ण एवं अनुपयुक्त पाठ्यक्रम के कारण भी प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति नहीं हो सकी है।

(4) शिक्षण प्रणाली की समस्या (Problem related to Teaching Method) :— बालकों का मानसिक विकास अधिक न होने के कारण उनको हम सरलता से एक ही शिक्षण प्रणाली द्वारा शिक्षा प्रदान कर सकते हैं किन्तु प्रौढ़ों को इस प्रकार पढ़ाना दुष्कर है। मानसिक परिपक्वता के कारण वे किसी भी बात को सहज ही स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगे।

(5) निर्धनता (Poverty) :— हमारे देश में निरक्षर प्रौढ़ों

की एक बड़ी संख्या है जिसे साक्षर बनाने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता है जबकि भारत जैसे देश के लिए यह संभव नहीं है। यही कारण है कि प्रौढ़ शिक्षा की गति अत्यन्त धीमी है।

(6) उत्तरदायित्व की समस्या (Problem of Responsibility):

एक बड़ी समस्या प्रौढ़-शिक्षा के उत्तरदायित्व से संबंधित है। केन्द्रीय सरकार ने प्रौढ़-शिक्षा का समस्त उत्तरदायित्व राज्य सरकार को सौंप दिया है। इस निर्णय के कारण कई बार प्रौढ़ शिक्षा के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है।

(7) समाज-सेवकों का अभाव (Lack of social workers):

यद्यपि समाज-शिक्षा या प्रौढ़ शिक्षा का प्रमुख उत्तरदायित्व सरकार के ऊपर रहता है किन्तु वास्तव में यह कार्य समाज सेवक या सेवक ही कर सकते हैं। किन्तु देश में ऐसे समाज सेवकों का पूर्णतया अभाव है।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम

(Programmes of Adult Education).

देश में प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित निम्नलिखित कार्यक्रमों को आरम्भ किया गया है —

(1) ग्रामीण क्रियात्मक साक्षरता प्रोजेक्ट (Rural functional literacy project):— सन् 1978 में आरम्भ इस प्रोजेक्ट में दो कार्यक्रम आरम्भ किए गए थे — (i) कृषक साक्षरता योजना (ii) अनौपचारिक शिक्षा- 15 से 25 वर्ष की आयु तक.

(2) नेहरू युवक केन्द्र (Nehru Yuvak Kendra):— 1948 से राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा यह केन्द्र स्थापित किये गये।

(3) महिलाओं और छात्राओं के लिए अनौपचारिक शिक्षा (Non formal Education for women and Girls):— यह कार्य यूनीसेफ द्वारा चलाया जा रहा है।

(4) श्रमिक विद्यापीठ (Shramik Vidhyapeeth):— बड़े-बड़े शहरों में श्रमिक विद्यापीठों द्वारा भी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाये जाते हैं।

(5) छात्रों और युवाओं द्वारा प्रौढ़ शिक्षा (Adult Education through Student and Youth):— प्रधान मंत्री के बीस